उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः575 / एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉकः 04–07–2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 04 जुलाई, 2025 को वर्ष 2025–26 की सम्पन्न नवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की नवीं बैठक, डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर. पी.एम.सी.), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 04 जुलाई, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक तथा मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; बी.एच.यू. वाराणसी के वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के वैज्ञानिक; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; सी.ए.एफ.आर.आई., झांसी के वैज्ञानिकों; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ; गन्ना विभाग; पशुपालन विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों / अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (04–10 जुलाई, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के बुंदेलखंड, विंध्य एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से कम होने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश के दक्षिणी भाग एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं–कहीं भारी वर्षा होने की भी सम्भावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2 से 4 डिग्री से.) अधिक तथा इससे संलग्न भाभर तराई, मध्य मैदानी एवं पूर्वी मैदानी के अधिकांश भाग में यह सामान्य के आस–पास या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) अधिक जबकि प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2 से 4 डिग्री से.) कम तथा पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, मध्य मैदानी एवं विंध्य के अधिकांश भाग में यह सामान्य के आस–पास या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) कम रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री से. दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 34 से 36 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी के अधिकांश भाग तथा भाभर तराई एवं मध्य पश्चिमी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग, पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिण–पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 03 जुलाई, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 112.5 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष कुल 133.2 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 18 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान पूर्वी उत्तर

प्रदेश में 126.6 मिमी. सामान्य के सापेक्ष 4 प्रतिशत कम कुल 122.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 92.8 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 61 प्रतिशत अधिक कुल 149 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

मानसून ऋतु साप्ताहिक वर्षा सांख्यिकी के आंकड़ों के अनुसार 27 जून से 03 जुलाई, 2025 के दौरान उत्तर प्रदेश में 44.2 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष कुल 57.6 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 30 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 49.7 मिमी. सामान्य के सापेक्ष कुल 49. मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो कि सामान्य के बराबर है, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 36.5 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 89 प्रतिशत अधिक कुल 69.1 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

कृषि विभाग से दिनांक 30 जून, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 15.20 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 14.33 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.33 लाख हे. के सापेक्ष 4.33 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 99.93 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 9.13 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 14.04 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 1.39 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 1.05 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.284 लाख हे. के सापेक्ष 0.99 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 0.53 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 0.38 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है। मूंगफली की फसल लक्ष्य 3.70 के सापेक्ष 0.26 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है एवं उर्द के लक्ष्य 4.83 सापेक्ष 0.55 तथा मूंग के लक्ष्य 0.47 के सापेक्ष 0.05 की बुवाई की जा चुकी है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.07 की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- धान की तैयार पौध की रोपाई पर्याप्त नमी की अवस्था में युद्धस्तर पर करें। किसान भाई धान की कम अवधि की प्रजातियों की सीधी बुवाई ड्रम सीडर (खेत तैयार कर) अथवा सीड ड्रिल (सूखी बुवाई) से कर सकते हैं।
- रोपाई किये गये धान में 15 से 21 दिन पर प्रथम बार यूरिया की टापड्रेसिंग करें।
- नर्सरी की पौध रोपाई से पूर्व धान की जड़ों को ट्राइकोडर्मा से शोधित कर रोपाई करें।
- धान की रोपाई के बाद जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर तीन से पॉच दिन के अन्दर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौध सुनिश्चित की जा सके।
- खरीफ फसलों की बुवाई से पूर्व कृषक जैविक व हरी खादों के साथ संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।
- मानसूनकाल में गन्ने में मिलीबग कीट का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 150 से 200 मि.ली. को 625 ली. पानी में घोल बनाकर गन्ने की पत्ती एवं पत्रकंचुक पर छिड़काव करें।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत ''श्री अन्न'' जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।
- मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, कोदों आदि की बुवाई का उचित समय है। बुवाई के पूर्व बीज शोधन हेतु बायोफारमुलेशन ट्राइकोडर्मा 4 से 6 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करें।
- जिन कृषकों ने हरी खाद के लिए सनई व ढैंचे की बुआई की है वह 40 से 42 दिन की पौध की पलटाई रोपाई के एक सप्ताह पूर्व कर दें।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।
- आम महोत्सव का आयोजन दिनांक 04, 05 एवं 06 जुलाई, 2025 को अवध शिल्पग्राम लखनऊ में किया जा रहा है जिसको देखने हेतु कोई भी बागवान कृषक या आम जनता निःशुल्क जा सकता है।
- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- अरहर का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु मेड़ों पर बुवाई करें।

धान की खेती

- जून के प्रथम सप्ताह में बोये गये धान की सीधी बुवाई में खरपतवार की निराई करें।
- धान की 20–25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 40–50 हिल तथा 2–3 पौधा प्रति हिल 3–4 सेमी. की गहराई तक करें।
- ऊसर भूमि में रोपाई हेतु 35 दिन की पौध का प्रयोग करें तथा एक स्थान पर दो से तीन पौध लगायें तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 से.मी. रखे।
- स्री पद्धति से 1 हे. धान की रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियॉ 4–5 इंच ऊॅची हों। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहॉ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें तथा 8–12 दिन वाली पौध की रोपाई करें।
- अचानक बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64–सब 1, स्वर्णा सब–1, जल लहरी, जलप्रिया एवं सॉभा महसूरी–सब 1 के बीज का प्रयोग करें।
- यदि अभी तक धान की नर्सरी या सीधी बुवाई नहीं किया है तो धान की कम अवधि (110 से 125 दिन) की उन्नत किस्मों सी.ओ.–51, नरेन्द्र–80, आई.आर.–50, नरेन्द्र–97, पंत धान–12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5 की नर्सरी डालें अथवा सीधी बुवाई करें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग के लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।
- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3–4 लीटर अथवा प्रेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 1–2 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- अरहर की देर से पकने वाली उन्नतशील किस्मों यथा नरेन्द्र अरहर 2, मालवीय चमत्कार, राजेन्द्र अरहर–2, मालवीय विकास, पूसा 9, आजाद, नरेन्द्र अरहर 1, अमर, बहार, आई.पी.ए.–206, पूसा अरहर 151 तथा आई.पी.ए.–15–2 की बुवाई मेढ़ों पर करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम या एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

उर्द की खेती

- उर्द की शीघ्र पकने वाली किस्मों (70 से 80 दिन) यथा पंत यू–35, नरेन्द्र उर्द–1, पंत उर्द–31, आई.पी. यू.–2–43, आई.पी.यू.–13–1 तथा आजाद उर्द–1 की जुलाई के तीसरे सप्ताह से बुवाई हेतु बीज की व्यवस्था करें।

श्री अन्न की खेती

- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस.एच. –13 व सी.एस.एच.–23 की बुवाई करें।
- सावां की प्रजाति टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, डी.एच.बी.एम. –93–3, डी.एच.बी.एम.–33–3 की बुआई करें।
- कोदों की प्रजाति जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जे.पी.वी.के.–3 की बुआई करें।

- बाजरा, ज्वार व कोदों में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 0.2 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

मक्का की खेती

- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.एच–3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का–5, विवेक संकर मक्का–27, एम.एम.एच.–113, एक्स–1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का–2 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4–6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा–16, पी.एस.1042, जे.एस. 20–34, जे.एस. 20–98, पंत सोयाबीन–26, जवाहर सोयाबीन 20–116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.–2, जे.एस.–93–5, जे.एस.–72–44, जे.एस.–75–46, पूसा–20, जे.एस.–335, एम.ए.यू.एस.–47, एन.आर.सी.–37 तथा तराई एवं भाभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.–262 की बुवाई करें।

मूँगफली की खेती

- मूँगफली की कम अवधि वाली प्रजातियों चन्द्रा उपरहार, उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल (जी.201), टी.जी. 37ए, प्रकाश (CSMC-884) की बुवाई करें।
- बुवाई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व बीज को थीरम 2 ग्रा. + 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें अथवा ट्राइकोडर्मा 4 ग्रा. एवं 1 ग्रा. कार्बाक्सिन प्रति कि. ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। इस शोधन के 5–6 घंटे बाद बोने से पहले बीज को मूंगफली के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर, टा–78, टा–13, टा–12 तथा टा–4 बुवाई करें।

लोबिया की खेती

- लोबिया की उन्नतशील किस्मों यथा पंत लोबिया–5, पंत लोबिया–3, पंत लोबिया–4, आर–101, जी.सी.–3 तथा आर–9 की बुवाई करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने को गिरने को बचाने एवं अवांछित कल्लों को निकलने से रोकने हेतु गन्ने की जड़ों पर यदि अभी तक मिट्टी नहीं चढ़ाई है तो अनुकूल मौसम होने पर मिट्टी चढ़ा दें।
- बसंतकालीन गन्ने में तीव्र वृद्धि हेतु नैनो यूरिया 2.5 मि.ली. एवं नैनो डी.ए.पी. 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से खेत में नमी की दशा में गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से नहला दें।
- गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे है तो खेत में नमी बनाये रखे तथा कीटनाशक का छिड़काव न करें अन्यथा की स्थिति में इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति. ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु उर्वरक एन.पी.के. 19:19:19 की 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- फूलगोभी की अगेती किस्में अर्ली कुवारी, पूसा अर्ली सेंथेटिक, पंत गोभी–3, पूसा दीपाली आदि किस्मों का 500–600 ग्राम बीज प्रति हे0 की दर से नर्सरी तैयार कर लें।

- भिण्डी की खरीफ (वर्षा ऋतु में) की बुवाई करें। इसकी बीज दर 10–12 किग्रा. प्रति हे0 तथा संकर किस्मों के लिए 5–8 किग्रा. बीज पर्याप्त है।
- खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिए पौधशाला मे खरीफ प्याज की बुआई करें। एक हे0 प्याज फसल के लिए 8–10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है।
- खरीफ ऋतु की अगेती सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5–6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- लोबिया की खेती के लिए 15–20 किग्रा. बीज प्रति हे0 की दर पर्याप्त होती है। बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचार करके बुआई करना चाहिए।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10–15 से.मी. ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।

<u>बागवानी</u>

- आम, अमरूद, लीची, आंवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला, पतीता के पौधों का रोपण कर नये बाग लगायें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।
- आम में परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8–10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिए।
- आम को एक सार पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरेल (1.8 मि.ली./लीटर) गुनगुने पानी (52±20 से.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदोपरान्त छांव में सुखाने के बाद भण्डारण करना चाहिए। इसी में (0.5 ग्रा./लीटर) कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु ऊतक संवर्धित रोगरोधी जी–9 प्रजाति लगाये। केले के पुराने बागों में पौधो में सहारा लगायें।

<u>पशुपालन</u>

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- पशुबाड़े में बाह्य परजीवी की रोकथाम हेतु चूने का छिड़काव करें।
- घोंघेयुक्त तालाबों के आस–पास पशुओं को न चरायें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं को गड्ढ़ों में भरे गंदे पानी को पीने से बचायें।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- वर्तमान समय में खरीफ चारा फसलों की बुवाई प्रारंभ हो गई है। सभी कृषक/पशुपालक खरीफ चारा फसलों यथा ज्वार, बाजरा, लोबिया, मक्का आदि की बुवाई समय से करें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मत्स्य पालन

- वर्तमान मौसम में वर्षा का मौसम एवं आद्रता अधिक होने के कारण तालाब के पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा काफी कम हो जाने की संभावना बनी रहती है, जिससे मछली तालाब के ऊपरी सतह पर आकर मरने लगती है। इसके बचाव के लिए शाम एवं सवेरे 4–4 घंटा एयरेटर या पंप से पानी को चलाएँ अथवा ऑक्सीजन बढ़ाने वाली दवा यथा आटूमैक्स या एडऑक्सी या ऑक्सीग्रो का प्रयोग 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से सुखा छिड़काव करें।
- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि. ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15–20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन करायें।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक आद्रता, वर्षा रहने पर भोजन का प्रयोग आधा कर दें।
- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000–4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- ब्रूडर तालाब में पूरक आहार का प्रयोग मछली के कुल शरीर भार का 2 से 3 प्रतिशत की दर से करें।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने हैचरी से रोहु, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प एवं सिल्वर कार्प को स्पॉन का उत्पादन गहन प्रबंधन से करना चालू रखें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000–8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000–4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।
- तालाब में चूने का प्रयोग 15 दिनों के अन्तराल पर पी.एच. मान के अनुसार 10–15 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से करें।

वानिकी

- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य प्रारंभ करें।
- पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक पौधों को खुले क्षेत्र में रखें।

रेशम

- कृषकों द्वारा रोपित शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण में घास, खरपतवार की सफाई कर गुड़ाई का कार्य कर लें तथा एरी रेशम कीटपालन हेतु अरण्डी बीज की बुवाई करें।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।
- शहतूती सेक्टर में मानसून सीड क्राप एवं टसर सेक्टर में अम्पतिया क्राप में कीटाण्ड उत्पादन प्रारंभ हो चुका है। इस हेतु समस्त आवश्यक तैयारियां यथा विशुद्धीकरण आदि की कार्यवाही तत्काल कर लें।
- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य कर लें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- किसान भाई सचेत ऐप को डाउनलोड करें और एक–दूसरे किसान भाईयों को भी प्रेरित करें इस ऐप के माध्यम से रियल टाइम मौसम की जानकारी ली जा सकती है। बाढ़, भूस्खलन, चक्रवात, सुनामी, जंगलों की आग, हिम–स्खलन, आंधी, तुफान या फिर बिजली गिरने जैसी आपदाएं हो, सचेत ऐप आपको हर प्रकार से सूचना उपलब्ध कराने और सुरक्षित रखने का प्रयास करता है।
  (https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cdotindia.capsachet&pli=1)
- वर्तमान मौसम में सर्पदंश की घटनायें होती है अतः सर्पदंश के उपरांत रक्त प्रवाह को बांधने का प्रयास न करें। घाव को पानी से धोएं और साफ कपड़े से ढक दें। प्रभावित अंग स्थिर रखने हेतु किसी सीधी स्केल या फन्टी व बैंडेज की सहायता से बांधें। जल्द से जल्द किसी नजदीक स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें।
- भारत सरकार तथा राज्य सरकार अधिसूचित आपदाओं के सापेक्ष मृत्यु होने की स्थिति में पीड़ित परिवारों को धनराशि रू. 4,00,000.00 लाख की अहैतुक सहायता प्रदान की जाती है।
- वज्रपात की स्थिति में यदि आप खेत खलिहान में काम कर रहे हैं और किसी सुरक्षित स्थान की शरण नहीं ले पा रहे है तो इस स्थिति में जहां है वहीं रहे और हो सके तो पैरों के नीचे सूखी चीजों जैसे

लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रख लें अथवा दोनों पैरों को आपस में सटा लें तथा दोनों हाथों से कानों को बंद कर अपने सिर को जमीन की तरफ यथा संभव झुका लें तथा सिर को जमीन से न सटायें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 10 जुलाई, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(राजर्षि कुमार गौड़)
उप महानिदेशक (आर.पी.एम.सी.)

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।

24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की नवीं बैठक दिनांक 04 जुलाई, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. राजर्षि कुमार गौर, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
4. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
5. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।
6. डा. आशाराम सिरवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएफआरआई, झांसी (ऑनलाइन)।
7. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
9. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
12. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
13. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
16. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
17. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
18. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ (ऑनलाइन)।